सुविचार- अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

कहानी

चोर के घर चोर

वन में कुछ दिन से चोरी होना शुरू हो गयी थी. छोटी से बड़ी चीज तक रोज रोज चोरी होने लगी. एक दिन भालू का पेन सैट चोरी हो गया एक दिन हिरन के घर से हिरनी के जेवर गायब हो गए. चंपक वन में जहां कल तक सब अपने को व अपने सामान को सुरक्षित महसूस करते थे. अब असुरक्षा की भावना से घिरने लगे, पता नहीं कब किसके यहां चोरी हो जाए. साथ ही ये भी डर कि कहीं किसी का शारीरिक नुकसान न हा जाए. किसी को समझ नहीं आ रहा था कि चोरियां कौन कर रहा है. हाथी के घर से उसके बच्चे का बैग चोरी हो गया. वह बड़ा दुखी था, बैग किताबों से भरा था. अब फिर से नई कारपियां किताबें खरीदनी पड़ेंगी. हाथी ने सोचा कुछ उपाय करना होगा, वरना चोर के हौंसले बुलंद होते जा रहे हैं. उसने कोयल को बुलाया और बोला तुम्हे हमारी मदद करनी होगी. मैं क्या मदद कर सकती हूं. तुम आसानी से चोर को पकड़वा सकती हो, जरा जंगल में घूमकर वह काम करो.

मुझे दो दिन का समय दीजिए मैं कोशिश करूंगी कि चोर, पकड़ा जाये. कोयल फुर्र से जा उड़ी और अपना काम शुरू कर दिया. वो बारी बारी से सभी जानवरों से मिली ताकि जान सके कि कौन क्या करता है. वो अपने काम में लगी थी. तभी तोते का घोंसला बच्चों समेत चोरी हो गया. कोयल ने ताते को सांत्वना दी चिंता नहीं करो जल्दी ही चोर पकड़े जाएंगे.

दो दिन बीत गए तो हाथी कोयल के पास आया और बोला व ?या खबर है. मैं पक्का तो नहीं कह सकती पर फिर भी मुझे एक पर शक है. कौन है जल्दी बोलो. मुझे बंदर पर शक है. तुम्हारे शक का कोई आधार तो होगा. हां, हां आधार है. मुझे उस पर शक करने के कई कारण हैं. पहली बात तो यह मैंने सब से अलग अलग बात की चोरी की वारदातों को लेकर सभी चिंतित व परेशान थे. सभी उसी पर बात करते हैं. पर बंदर चोरी से सम्बंधित कोई अच्छी बुरी बात नहीं करता. दूसरे उसके यहां कभी चोरी नही हुई छोटे बड़े लगभग सभी के घरों में चोरियां हो चुकी हैं. तीसरा वो अक्सर शहर आता जाता रहता है, हो सकता है सामान बेच आता हो. चौथा कारण है वो पेड़ पर रहता है. आसानी से नीचे सब पर नजर रख सकता है, कि कब कौन कहाँ है.

बस,बस शक करने के लिये इतने कारण बहुत हैं. तुम्हें बहुत बहुत धन्यवाद, अब तुम मुझपर छोड़ दो, देखो, कैसे उसकी अक्ल ठिकाने लगाता हूं. बस तुम भी उस पर नजर रखे रहो, जब वह शहर जाये, हमें खबर कर देना. धीरे धीरे बंदर से कोयल ने दोस्ती बढ़ा ली. और बंदर की हरकतों पर नजर रखने लगी, तभी एक दिन बंदर से पता चला की वह शहर जा रहा है. कोयल ने उससे पूछा तुम्हे कितना समय लग जायेगा वहां?

शहर जाना कोई मजाक नहीं है चार-पांच घंटे तो लग ही जायेंगे मैं कोई पक्षी तो हूं नही कि फुर्र से उड़ूँ और शहर पहुंच जाऊं. हां, हां बंदर भाई! तुम ठीक कहते हो, जाओ जाकर घूम आओ, मै तुम्हारा इंतजार करूंगी. कोयल ने भोलेपन से कहा. वहां बंदर शहर को रवाना हो गया. यहां कोयल ने तुरंत हाथी को खबर दी. हाथी ने सियार, भालू, हिरन सब को इकट्ठा किया. और सभी उस पेड़ के पास पहुंच गए. जहां बंदर रहा करता था.

हाथी बोला- कोयल अब तुम पेड़ पर तलाशी लो, देखो कहीं कुछ है. कोयल ने देखा एक जगह पर बहुत सा सामान रखा था, पेन, कुछ जेवर, घड़ी आदि कोयल ऊपर से चिल्लाई हां कुछ सामान तो रखा है. फेंको नीचे. कोयल चोंच से पकड़कर सामान नीचे फेंकने लगी. जिसकी भी जो चीज थी उसने उसको उठा लिया. अब सभी आसपास छुप गये. थोड़ी देर में बंदर शहर से लौटा, और अपने ठिकाने पर पहुंचा वहां सामान गायब पाकर चिल्लाने लगा- कौन मेरे पेड़ पर आया था. मेरा सामान किसने छुआ है. आसपास छुपे लोग सभी बाहर आ गए और बोले- बंदर भाई! आज ता चोर के घर चोर घुसे थे. क्या मतलब! अब ज्यादा भोले मत बनो बंदर जी. हाथी ने गुस्से से कहा, बस ये बता दो की तोते के बच्चे कहाँ हैं? बच्चे! बच्चे तो मैंने बेच दिये. क्या कहां तोता चिल्लाया.

मुझे माफ कर दो. मैं समझता था कि आप लोग कुछ नहीं जानते. चलो तुम्हें हमने माफ किया पर अब इस जंगल में तुम्हारा कोई काम नहीं चुपचाप चले जाओ वरना मार कर भगाये जाओगे, भालू ने समझाया. तभी बंदर वहां से चुपचाप चला गया.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

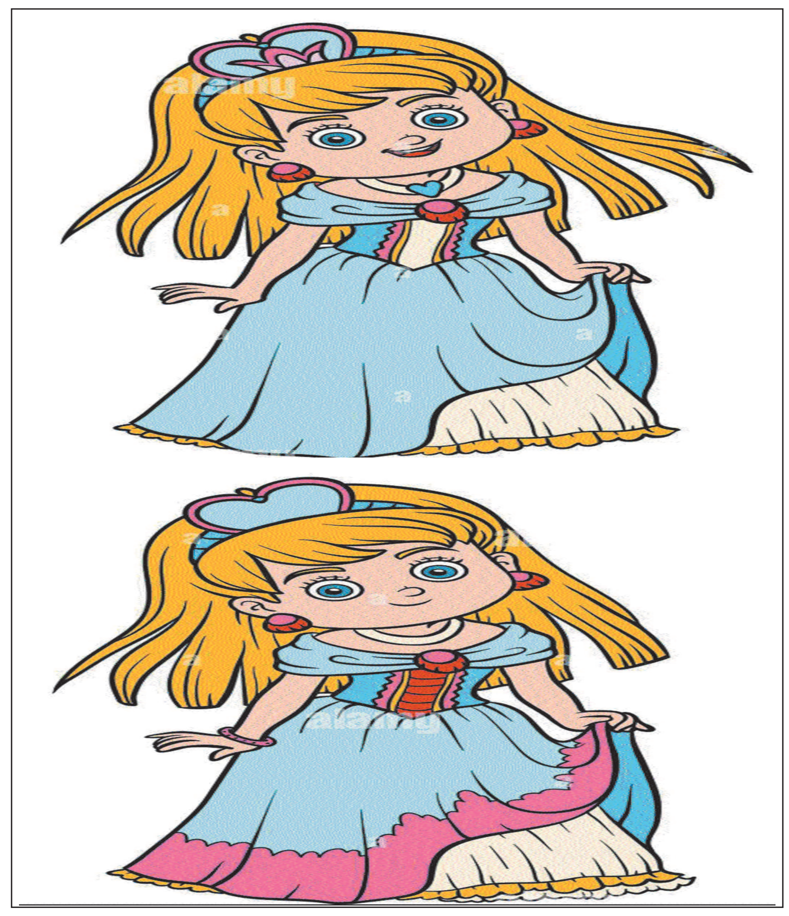

उत्तर- गुड़िया के सिर का ताज, 2. गुड़िया के गले का नेकलेस, 3. हाथ का कंगन, 4. फ्राक की लेस, 5. फ्राक की पिंक बार्डर, 6. गुड़िया की हंसी, 7. गुड़िया के सिर के बाल

भूल भुलैया

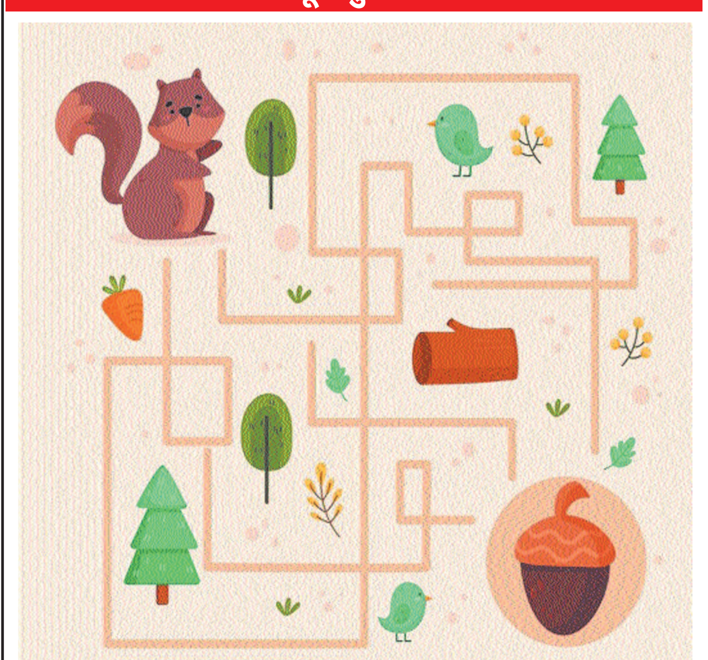

बूझो तो जानें

▸ क्या है जो हमेशा बढ़ती रहती है और कभी कम नहीं होती?

जवाब- उम्र

▸ वह क्या है, जो खरीदो तो काला, इस्तेमाल करो तो लाल और फेंको तो सफेद होता है?

जवाब- कोयला

▸ प्रथम कटे तो दर हो जाऊँ, अंत कटे तो बंद हो जाऊँ, केला मिले तो खाता जाऊँ, बताओ मैं हूँ कौन?

जवाब- बंदर

▸ दो सुंदर लड़के, दोनों एक रंग के, एक बिछड़ जाए तो दूसरा काम न आए.

जवाब- जूते

▸ एक थाल मोतियों भरा, सबके सिर पर उल्टा धरा, चारों ओर फिरे वो थाल, मोती उससे एक न गिरे.

जवाब- आकाश और तारे

▸ गोल है पर गेंद नहीं, पूँछ है पर पशु नहीं, पूँछ पकड़कर खेलें बच्चे, फिर भी मेरे आँसू न निकले.

जवाब- गुब्बारा

▸ वह क्या है, जो सबके पास है, हमेशा साथ रहती है और उसे कोई चुरा नहीं सकता.

जवाब- परछाई

▸ वह क्या है जो हमारी मुट्ठी में हैं लेकिन हाथ में नहीं है.

जवाब- हथेली की लकीरें

▸ मैं एक फूल भी हूँ, फल भी हूँ और मिठाई भी हूँ, मेरा नाम क्या है?

जवाब-गुलाबजामुन

▸ कौन सा जानवर है जो जूते पहनकर सोता है?

जवाब-घोड़ा

कविता

ओ सूरज भैया

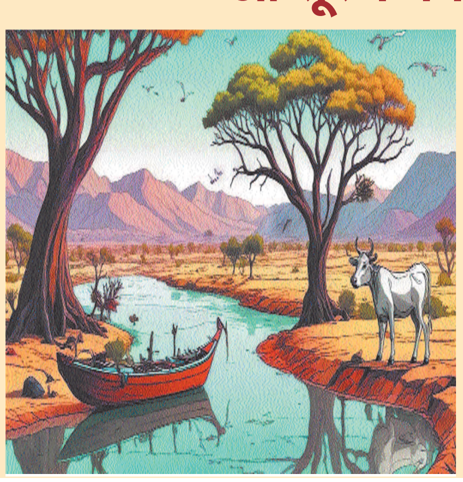

ताता था थैया, ओ सूरज भैया!
गर्मी है ज़्यादा, क्या है इरादा?

प्यासी है गैया, दूर खड़ी नैया,
कहीं नहीं पानी, क्या तुमने ठानी?

उड़ रही चिरैया, कहीं नहीं छैयाँ,
पेड़ थके हारे, ढूँठ हुए सारे।

चले न पुरवैया, तन बदन पसीना,
जेठ का महीना, हैया ओ हैया!

बजेगी बधैया, भर उठे तलैया,
बरखा का बुलावा, भेज रहा

हंसी-ठिठोली

▸ चिंटू- पप्पू, जरा अपनी साइकिल आज मुझे देना.
पप्पू - नहीं.
चिंटू - अगर मुझे साइकिल नहीं दोगे, तो मेरा दिल खट्टा हो जाएगा.
पप्पू ने झट से बोला ङ्क तो चीनी खा लेना.

▸ पापा- चिंटू, आज तुम स्कूल क्यों नहीं जा रहे हो?
चिंटू - पापा, कल स्कूल में हमें तौला गया था और क्या पता आज बेच ही न दें.

▸ मास्टर जी - चिंटू, बताओ बिल्ली पूंछ क्यों हिलाती है?
चिंटू- क्योंकि, पूंछ बिल्ली की है.

अध्यापक - बच्चों बताओ, गणित की किताब देखकर अक्सर सब लोग मायूस क्यों हो जाते हैं?
छात्र- क्योंकि, इसमें किसी भी सवाल का हल नहीं होता है.

▸ मास्टर जी - खाना खाने से पहले सभी बच्चों को अपने हाथ धोने चाहिए.
चिंटू - लेकिन, मैं तो खाना खाने के बाद हाथ धोता हूं.
मास्टर जी- ऐसा क्यों?
चिंटू - ताकि मोबाइल पर दाग न पड़ जाए.
मम्मी-चिंटू, आज का पेपर मुश्किल था क्या?
चिंटू- नहीं, सवाल तो आसान थे, लेकिन उनके जवाब मुश्किल थे.

रोचक जानकारी

आयरन लेडी के नाम से भी जाना जाता है एफिल टॉवर

एफिल टॉवर का निर्माण कार्य जनवरी 1887 में शुरू हुआ था और 31 मार्च, 1889 को समाप्त हुआ. पेरिस, फ्रांस में एफिल टॉवर को गंभीर सेलेब का दर्जा प्राप्त है. यह दुनिया में सबसे अधिक पहचाने जाने वाले स्मारकों में से एक है. और यह स्थल, जिसे आयरन लेडी के नाम से भी जाना जाता है, यहाँ प्रति वर्ष लगभग सात लाख पर्यटक आते हैं. लेकिन अपनी प्रसिद्धि के बावजूद, टावर में कुछ स्मारकीय रहस्य हैं. टावर 320 मीटर (1,050 फीट) ऊंचा है, लगभग 81 मंजिला इमारत की ऊंचाई के बराबर. अपने निर्माण के दौरान यह विश्व स्तर पर सबसे ऊंची मानव निर्मित संरचना बन गई, जिसने न्यूयॉर्क शहर की क्रिसलर बिल्डिंग को लगभग 200 फीट (61 मीटर) पीछे छोड़ दिया.

एफिल टॉवर के निर्माण के लिए उपयोग की जाने वाली प्राथमिक सामग्री पोखर लोहा की आपूर्ति पोम्पी फोर्ज, फ्रांस के पूर्व से की गई थी. टावर के निर्माण में 7,300 मीट्रिक टन लोहा, 18,000 हिस्से और 2,500,000 रिवेट्स का उपयोग किया गया था

गुस्ताव एफिल, जिन्होंने ऐतिहासिक स्थल को डिजाइन किया था, ने संरचना के शीर्ष स्तर पर खुद के लिए एक छोटा अपार्टमेंट बनाया. ऊँचे पनाहगाह में आलीशान गलीचे, तैलचित्र और यहाँ तक कि एक भव्य पियानो भी था. वहाँ केवल कुछ वीआईपी लोगों को ही जाने की अनुमति थी, जैसे सुपरस्टार वैज्ञानिक थॉमस एडिसन. एफिल की मृत्यु के बाद 1920 के दशक से अप्रयुक्त, 950 फुट ऊंचे पैड के बारे में 2015 तक बहुत कम लोग जानते थे जब इसे जनता के देखने के लिए खोला गया.

एफिल टॉवर का शीर्ष सितारों और मौसम का अध्ययन करने के लिए एक आदर्श स्थान प्रतीत होता है. कोई आश्चर्य नहीं कि एफिल ने तीसरे स्तर पर दो छोटी प्रयोगशालाएँ स्थापित कीं जहाँ खगोलशास्त्री और मौसम विज्ञानी काम कर सकते थे. एफिल ने अपने स्वयं के प्रयोग भी किये. शायद इस ऐतिहासिक स्थल का नाम बदलकर इको टावर कर दिया जाना चाहिए. 2015 में श्रमिकों ने संरचना के दूसरे स्तर पर दो पवन टरबाइन स्थापित करके आयरन लेडी को पर्यावरण के अनुकूल बदलाव दिया. ये उपकरण टावर की दुकानों और रेस्तरां के लिए हवा को बिजली में परिवर्तित करते हैं.

एफिल टॉवर को आधिकारिक तौर पर 1889 के विश्व मेले में खोला गया था. पहली बार 1851 में लंदन, इंग्लैंड में आयोजित दुनिया के मेलों में दुनिया भर के अत्याधुनिक आविष्कारों, वास्तुकला और कला का प्रदर्शन किया गया था.

इंडियन जेम्स बॉन्ड अजीत डोभाल

अजीत कुमार डोभाल का जन्म 20 जनवरी 1945 को हुआ था और वह वर्तमान में भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) के रूप में कार्यरत हैं. उनकी पृष्ठभूमि भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) की है और वह इंटेलिजेंस ब्यूरो (आईबी) के प्रमुख थे. 2004-05 में आईबी के निदेशक बनने से पहले, उन्होंने इसके संचालन का नेतृत्व करते हुए दस साल बिताए. उन्होंने एक साल तक पाकिस्तान में आईबी के लिए गुप्त जासूस के रूप में भी काम किया और बाद में छह साल तक इस्लामाबाद में भारतीय उच्चायोग में एक अधिकारी के रूप में काम किया. उनका अधिकांश करियर आईबी के लिए जासूस के रूप में काम करने के लिए समर्पित रहा है.

अजीत कुमार डोभाल का जन्म 20 जनवरी 1945 को हुआ था और वह वर्तमान में भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) के रूप में कार्यरत हैं. उनकी पृष्ठभूमि भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) की है और वह इंटेलिजेंस ब्यूरो (आईबी) के प्रमुख थे. 2004-05 में आईबी के निदेशक बनने से पहले, उन्होंने इसके संचालन का नेतृत्व करते हुए दस साल बिताए. उन्होंने एक साल तक पाकिस्तान में आईबी के लिए गुप्त जासूस के रूप में भी काम किया और बाद में छह साल तक इस्लामाबाद में भारतीय उच्चायोग में एक अधिकारी के रूप में काम किया. उनका अधिकांश करियर आईबी के लिए जासूस के रूप में काम करने के लिए समर्पित रहा है. 1972 में 2 जनवरी से 9 जनवरी के बीच, डोभाल को 28 दिसंबर 1971 को भड़के दंगे के बाद शांति और व्यवस्था बहाल करने के लिए तत्कालीन गृह मंत्री के. करुणाकरण द्वारा थालास्सेरी भेजा गया था, जिसमें आरएसएस पर मुसलमानों और मस्जिदों को निशाना बनाने का आरोप लगाया गया था. अजीत डोभाल ने दस वर्षों से अधिक समय तक इंटेलिजेंस ब्यूरो के संचालन प्रभाग का नेतृत्व किया. वह MAC (मल्टी-एजेंसी सर्कल) और (इंटेलिजेंस पर संयुक्त कार्य बल) के संस्थापक अध्यक्ष भी थे. 1988 में ऑपरेशन ब्लैक थंडर के दौरान अजीत डोभाल आईएसआई एजेंट बनकर स्वर्ण मंदिर में घुस गए थे.

उन्होंने खालिस्तानी अलगाववादियों के बारे में गुप्त जानकारी इकट्ठा की, जिसमें उनके हथियारों और पदों के बारे में विवरण भी शामिल था. डोभाल उनके समूह के एक महत्वपूर्ण सदस्य बन गए और उनकी योजनाओं को बाधित करने के लिए उन्हें भ्रामक सलाह दी. मई 2020 में, उन्होंने म्यांमार के 22 उग्रवादी नेताओं को भारत को सौंपने के लिए बातचीत की, जो असम और अन्य पूर्वोत्तर राज्यों में सक्रिय थे.अजीत डोभाल को अपने पुलिस करियर में केवल छह साल की सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक दिया गया. उन्हें राष्ट्रपति पुलिस पदक भी मिला. 1988 में, उन्हें सर्वोच्च वीरता पुरस्कारों में से एक, कीर्ति चक्र से सम्मानित किया गया, जिससे वह यह पदक पाने वाले पहले पुलिस अधिकारी बन गए, जो पहले सेना के लिए आरक्षित था.

बिंदु मिलाओ

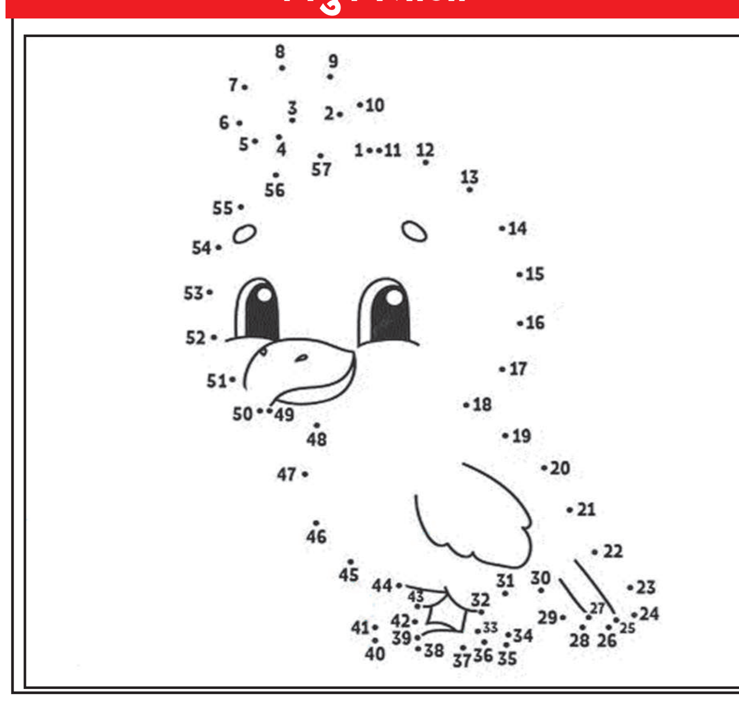

रंग भरो

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**